>

Title: Need to construct dams on rivers in Bihar.

डॉ. भोला सिंह (नवादा): सभापति महोदय, आसन की सदाशयता ने मेरे प्रभु जो मेरी जनता है, उसकी पीड़ा को सहलाने का इस सार्वभौम सदन में जो अवसर दिया है, मैं आपके प्रति आभार प्रकट करता हूं।

महोदय, बिहार में नवादा जिला के अंतर्गत अपर सकरी, धनंजय, खूड़ी और ढांढर जैसी अनेक नदियां हैं जो गर्मी के समय सूख जाती हैं और बरसात में जिले के निवासियों को उसका पानी अपने प्रवाह से भयानक कटाव करके हजारों लोगों को विस्थापित कर देता है। 1983 में तत्कालीन बिहार सरकार के मुख्य मंत्री स्वर्गीय चंद्रशेखर सिंह ने अपर सकरी डैम परियोजना के माध्यम से सिंचाई के प्रबंध की ओर कदम उठाया था। उद्देश्य था वर्षा के पानी को नदी में रोके रखना और डैम बनाकर हजारों हेक्टेयर जमीन को सिंचित करना। उन्होंने इसके लिए 1984 में इसका शिलान्यास भी किया, पर आज तक वह योजना अधर में लटकी हुई है। इसी तरह केन्द्र सरकार ने 1987-88 में ढांढर, खूड़ी और धनंजय नदियों में डैम बनाने की योजना का कार्यक्रम बनाकर उस दिशा में कदम उठाया था, पर यह भी कार्यान्वयन के रास्ते में ही रहा और विस्मृति के गर्भ में समा गया। नवादा शाश्वत क्रोनिक सुखाड़ के रूप में लाखों लोगों की जिंदगी में खुशियों की बहार नहीं आने दी। आजादी के 65वें वÂर्ष के बाद भी नवादा के विकास के लिए न तो किसी राज्य सरकार और न ही केन्द्र सरकार ने पहल की। वÂाों तक सुखाड़ की मार से नवादा की धरती की छाती में दरार पड़ती गई। संघीय व्यवस्था होने के कारण केन्द्र सरकार अपनी वरीयता को ध्यान में रखते हुए नवादा के सुखाड़ को समाप्त करने के लिए अपर सकरी, धनंजय, खूड़ी और ढांढर नदियों में डैम बनाकर वर्षा के पानी का संयोजन कर, नहरें निकालकर हजारों एकड़ में सिंचाई की व्यवस्था को सुनिश्चित करने के लिए कदम उठाए। मैं इस ओर सरकार का ध्यान आकृÂष्ट करता हूं।